प्रकृतिवादी (Physiocratic) विचारधारा की प्रमुख विशेषताओं की विस्तृत विवेचना

प्रकृतिवादी (Physiocratic) विचारधारा अर्थशास्त्र के इतिहास की प्रथम वैज्ञानिक विचारधारा मानी जाती है। इसका उदय 18वीं शताब्दी में फ्रांस में हुआ। उस समय फ्रांस की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी तथा किसानों पर भारी करों और सरकारी नियंत्रण के कारण कृषि का विकास रुक गया था। ऐसे समय में कुछ फ्रांसीसी अर्थशास्त्रियों ने यह विचार प्रस्तुत किया कि राष्ट्र की वास्तविक समृद्धि का स्रोत कृषि है और सरकार को आर्थिक गतिविधियों में कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए। इस विचारधारा के प्रमुख प्रवर्तक थे। इनके अतिरिक्त टरगो (Turgot) और मिराबो (Mirabeau) भी इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक थे।

प्रकृतिवादियों ने प्राकृतिक नियमों, आर्थिक स्वतंत्रता, मुक्त व्यापार तथा कृषि की प्रधानता पर बल दिया। इनके विचारों ने आगे चलकर सहित शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों को गहराई से प्रभावित किया।

प्रकृतिवादी विचारधारा की प्रमुख विशेषताएँ

1. कृषि को ही उत्पादक क्षेत्र मानना

प्रकृतिवादियों का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत था कि केवल कृषि ही वास्तविक उत्पादन करती है। उनके अनुसार भूमि से प्राप्त उत्पादन में लागत से अधिक अधिशेष (Net Product) उत्पन्न होता है, जो राष्ट्र की वास्तविक आय और संपत्ति का स्रोत है। उद्योग और व्यापार केवल वस्तुओं का रूप बदलते हैं, इसलिए वे नए धन का सृजन नहीं करते।

2. प्राकृतिक व्यवस्था (Natural Order) का सिद्धांत

प्रकृतिवादियों का विश्वास था कि संसार एक प्राकृतिक व्यवस्था द्वारा संचालित होता है। यदि मनुष्य प्रकृति के नियमों के अनुसार कार्य करे और सरकार अनावश्यक हस्तक्षेप न करे, तो आर्थिक व्यवस्था स्वतः संतुलित एवं समृद्ध हो जाएगी। इसलिए उन्होंने कृत्रिम प्रतिबंधों का विरोध किया।

3. लेसेज़-फेयर (Laissez-faire) का सिद्धांत

प्रकृतिवादियों का प्रसिद्ध नारा था–

"Laissez-faire, Laissez-passer" अर्थात "लोगों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दें तथा वस्तुओं को स्वतंत्र रूप से आने-जाने दें।"

उन्होंने कहा कि सरकार का कार्य केवल शांति, सुरक्षा, न्याय और संपत्ति की रक्षा करना है। व्यापार, उत्पादन और कीमतों का निर्धारण बाजार की शक्तियों पर छोड़ देना चाहिए।

4. निजी संपत्ति का समर्थन

प्रकृतिवादियों ने निजी संपत्ति को आर्थिक विकास की आधारशिला माना। उनका विचार था कि यदि किसानों और भूमि स्वामियों को संपत्ति की सुरक्षा मिलेगी तो वे अधिक निवेश करेंगे, नई तकनीक अपनाएँगे तथा कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी।

5. शुद्ध उत्पाद (Net Product) की अवधारणा

प्रकृतिवादियों ने शुद्ध उत्पाद (Net Product) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार कृषि उत्पादन से सभी लागतों को घटाने के बाद जो अतिरिक्त उत्पादन बचता है, वही वास्तविक राष्ट्रीय आय है। यही अधिशेष समाज के अन्य वर्गों के पालन-पोषण का आधार बनता है।

6. एकल कर (Single Tax) का सिद्धांत

प्रकृतिवादियों का मत था कि भूमि ही संपत्ति का मुख्य स्रोत है, इसलिए कर भी केवल भूमि पर लगाया जाना चाहिए। उन्होंने अनेक प्रकार के करों का विरोध करते हुए केवल भूमि कर (Single Tax) का समर्थन किया। उनका मानना था कि इससे कर व्यवस्था सरल और न्यायसंगत बनेगी।

7. आय के चक्रीय प्रवाह (Circular Flow of Income) की अवधारणा

फ़्राँस्वा केने ने "टेबलो इकोनॉमिक (Tableau Économique)" प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने यह दिखाया कि कृषि से उत्पन्न आय किस प्रकार किसानों, भू-स्वामियों तथा उद्योग एवं व्यापार से जुड़े लोगों के बीच प्रवाहित होती है। यह आधुनिक आय के चक्रीय प्रवाह सिद्धांत का प्रारंभिक स्वरूप माना जाता है।

8. समाज का वर्गीकरण

प्रकृतिवादियों ने समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया–

(क) उत्पादक वर्ग (Productive Class): किसान एवं कृषि श्रमिक, जो वास्तविक उत्पादन करते हैं।

(ख) स्वामित्व वर्ग (Proprietary Class): भू-स्वामी, जिन्हें भूमि से लगान प्राप्त होता है।

(ग) अनुत्पादक या निष्फल वर्ग (Sterile Class): व्यापारी, कारीगर एवं उद्योगपति, जो वस्तुओं का रूपांतरण या वितरण करते हैं।

9. मुक्त व्यापार का समर्थन

प्रकृतिवादियों ने घरेलू एवं विदेशी दोनों प्रकार के व्यापार में स्वतंत्रता का समर्थन किया। उनका विश्वास था कि मुक्त व्यापार से प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी तथा उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर वस्तुएँ प्राप्त होंगी।

10. सरकार की सीमित भूमिका

उन्होंने सरकार की भूमिका को सीमित रखने की बात कही। उनके अनुसार सरकार को केवल कानून-व्यवस्था बनाए रखना, न्याय प्रदान करना, राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा निजी संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए। उत्पादन और व्यापार में अत्यधिक सरकारी हस्तक्षेप आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है।

11. राष्ट्रीय संपत्ति की नई अवधारणा

प्रकृतिवादियों ने वाणिज्यवाद (Mercantilism) का विरोध किया। वाणिज्यवादियों का मानना था कि सोना-चाँदी ही राष्ट्र की संपत्ति है, जबकि प्रकृतिवादियों ने कहा कि राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति उत्पादन, विशेषकर कृषि उत्पादन से उत्पन्न होती है।

12. आर्थिक स्वतंत्रता पर बल

प्रकृतिवादी प्रत्येक व्यक्ति को उत्पादन, व्यापार, निवेश और व्यवसाय की स्वतंत्रता देना चाहते थे। उनका विश्वास था कि स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा से संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग होगा तथा राष्ट्र की समृद्धि बढ़ेगी।

प्रकृतिवादी विचारधारा का महत्व

- यह अर्थशास्त्र की पहली वैज्ञानिक विचारधारा मानी जाती है।
- इसने आर्थिक स्वतंत्रता और मुक्त व्यापार की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया।
- इसने सरकार के सीमित हस्तक्षेप की नीति का समर्थन किया।
- आय के चक्रीय प्रवाह की अवधारणा प्रस्तुत कर आधुनिक समष्टि अर्थशास्त्र की नींव रखी।
- इसने शास्त्रीय अर्थशास्त्र के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।
- एडम स्मिथ तथा अन्य शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों ने इससे प्रेरणा प्राप्त की।
- कृषि के महत्व को राष्ट्रीय समृद्धि से जोड़कर आर्थिक नीति को नई दिशा दी।

प्रकृतिवादी विचारधारा की आलोचनाएँ

- इसने केवल कृषि को उत्पादक माना, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र की उपेक्षा की।
- आधुनिक अर्थव्यवस्था में उद्योग, व्यापार और सेवाएँ भी राष्ट्रीय आय के प्रमुख स्रोत हैं।

- एकल कर का सिद्धांत व्यावहारिक नहीं माना जाता।
- इसने औद्योगिक क्रांति और तकनीकी विकास के महत्व को पर्याप्त स्थान नहीं दिया।
- आर्थिक विकास के अन्य कारकों, जैसे पूँजी, उद्यमिता और नवाचार, को कम महत्व दिया।

निष्कर्ष

प्रकृतिवादी विचारधारा ने अर्थशास्त्र के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की। इसने प्राकृतिक व्यवस्था, आर्थिक स्वतंत्रता, निजी संपत्ति, मुक्त व्यापार तथा सरकार के सीमित हस्तक्षेप जैसे सिद्धांतों को स्थापित किया। यद्यपि आधुनिक अर्थव्यवस्था में इसकी अनेक मान्यताएँ पूर्णतः स्वीकार नहीं की जातीं, फिर भी इसके सिद्धांतों ने शास्त्रीय अर्थशास्त्र के विकास की मजबूत नींव रखी। इसलिए प्रकृतिवादी विचारधारा को आर्थिक चिंतन के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।